उड़द एवं मूँग की उन्नत खेती

उड़द एवं मूँग उत्तर भारत, विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की प्रमुख दलहनी फसलें हैं। कम फसल अवधि (70–90 दिन) होने के कारण इन्हें गन्ने में अंतःफसल के रूप में व जायद में खाली पड़े खेतों के समुचित उपयोग के लिये भी उगाया जाता है। उड़द एवं मूँग उत्तर भारत के लोगों के भोजन में प्रमुख रूप से सम्मिलित होने वाली दालें हैं जो कि प्रोटीन की प्रचुर स्त्रोत हैं। साथ ही ये दलहनी फसलें वातावरण में उपस्थित नत्रजन को मिट्टी में संचित करके मृदा की उर्वरता को बढ़ाती हैं तथा अगली फसल की उपज वृद्वि में मदद करती हैं। उड़द एवं मूँग की उन्नत खेती की तकनीकों का विवरण निम्न प्रकार है:

'पंत उर्द 31' उड़द की पीला मोजैक (चित्तवर्ण) रोगरोधी प्रजाति

1. **उन्नत प्रजातियाँ:** उड़द में उत्तरा (आई.पी.यू. 94–1), पन्त उर्द 31, नरेन्द्र उर्द 1 इत्यादि तथा मूँग में मेहा, सम्राट, आई.पी.एम. 2–14, आई.पी.एम. 2–3, एस.एम.एल. 668 इत्यादि प्रमुख उन्नतिशील प्रजातियाँ हैं।
2. **बुवाई का उचित समय:** बसंतकालीन फसल हेतु मार्च का प्रथम पखवाड़ा एवं वर्षाकालीन फसल हेतु जून के अंत से लेकर अगस्त के प्रथम सप्ताह तक।
3. **बीज दर:** बसंतकालीन फसल हेतु 25–30 कि.ग्रा./हेक्टेयर तथा वर्षाकालीन फसल हेतु 15–20 कि.ग्रा./हेक्टेयर।
4. **बीज शोधन:** सर्वप्रथम कार्बोक्जिन + थीरम (वीटावैक्स पावर) से बीज शोधन करें (3 ग्राम दवा/कि.ग्रा. बीज)। तत्पश्चात् इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. से (5 मिली/कि.ग्रा. बीज) व अंत में राइजोबियम कल्चर (25 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) से बीज शोधन करें।

'सम्राट' मूँग की पीला मोजैक रोगरोधी प्रजाति

5. **लाइन से लाइन व पौध से पौध की दूरी:** उड़द की बसंतकालीन फसल में लाइन से लाइन की दूरी 30 से.मी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. रखनी चाहिये। उड़द की वर्षाकालीन फसल में लाइन से लाइन की दूरी 45 से.मी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. रखें। मूँग की बसंतकालीन फसल में लाइन से लाइन की दूरी 25 से.मी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. रखनी चाहिये। मूँग की वर्षाकालीन फसल में लाइन से लाइन की दूरी 30–45 से.मी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. रखनी चाहिये।
6. **खाद व उर्वरक संस्तुति:** उड़द एवं मूँग की फसल में नत्रजन 20 कि.ग्रा./हे., फास्फोरस 50 कि.ग्रा./हे., पोटाश 40 कि.ग्रा./हे., जिंक सल्फेट 15 कि.ग्रा./हे. एवं जिप्सम 200 कि.ग्रा./हे. प्रयोग करना चाहिये। इनके लिए डी.ए.पी. की लगभग 100 कि.ग्रा. व एम.ओ.पी. की लगभग 80 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। जिप्सम के प्रयोग से गन्धक की कमी पूरी की जा सकती है।

7. **सिंचाईः** बसंतकालीन फसल में प्रथम सिंचाई बुवाई के 20–25 दिनों बाद तथा अगली सिंचाई 10–15 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार करें। खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था रखनी चाहिए ताकि खेत में पानी इकट्ठा न होने पाए।

8. **खरपतवार नियंत्रणः** खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडीमिथैलिन 30 ई.सी. की 3.3 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से फ्लैटफैन अथवा फ्लड जेट नॉजल लगाकर बुवाई के एक या दो दिन पश्चात् खेत में प्रयोग करें। खेत में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों की अधिकता होने पर क्विजैलोफॉप इथाईल 10 ई.सी. (टर्गा सुपर) के 1 लीटर उत्पाद को प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु इमाजेथापाइर (परसूट) 10 ई.सी. की एक लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 15–20 दिनों के बाद प्रयोग कर सकते हैं।

9. **समेकित नाशीजीव प्रबंधनः** उड़द एवं मूँग की फसल में प्रमुख रूप से बालदार सूँड़ी, तम्बाकू की इल्ली, सफेद मक्खी (पीला मोजैक के विषाणु फैलाने वाली), तनावेधक मक्खी आदि कीड़ों का प्रकोप अधिक देखा गया है। इसकी प्रमुख बीमारियों में पीला मोजैक (चित्तवर्ण), पर्णदाग, एन्थ्रैकनोज आदि हैं। उड़द एवं मूँग में फसल की अवस्था के अनुसार उपयोग किये जाने वाले समेकित नाशीजीव प्रबंधन का विवरण इस प्रकार हैः

(क) बुवाई के समय प्रारंभिक अवस्था में कीड़ों के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. की 4–5 मि.ली. मात्रा/कि.ग्रा. बीज व वीटावैक्स + थीरम (वीटावैक्स पावर) की 3 ग्राम मात्रा/कि.ग्रा. बीज की दर से बीज शोधन करना चाहिए। पीला मोजैक से सुरक्षा हेतु रोगरोधी प्रजातियों पंत उर्द 31 (उड़द), सम्राट, मेहा (मूँग) आदि को उगायें। बुवाई के उपरान्त, प्रारम्भिक अवस्था से लेकर फूल आने तक पीला मोजैक ग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट करते रहें।

(ख) लगभग 30–35 दिनों पर डाईमेथोएट 30 ई. सी. का 1.5 मि.ली./लीटर पानी की दर से छिड़काव करें जो सफेद मक्खी व अन्य कीड़ों से फसल की सुरक्षा करेगा व पीला मोजैक फैलने से भी रोकेगा।

(ग) रोगों के लक्षण दिखने पर कार्बेंडाजिम+मैनकोजेब की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

(घ) फलियाँ लगने पर कीड़ों से सुरक्षा हेतु प्रोफेनफॉस 50 ई.सी. का 2 मि.ली./लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

10. **फलियों की तुड़ाई एवं उपजः** एक साथ पकने वाली प्रजातियों में पूरी फसल की कटाई एक साथ करें। कई बार में पकने वाली प्रजातियों में फलियों की 2–3 तुड़ाई के बाद ही फसल की कटाई करें। उड़द की अच्छी फसल से 15–20 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा मूँग की अच्छी फसल से 12–15 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक की उपज मिल जाती है।

संकलन एवं सम्पादनः डॉ. चन्द्रभानु, डॉ. आर.पी. मिश्र, डॉ. अनिल कुमार एवं डॉ. टेशू कुमार
प्रकाशनः निदेशक, भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ (उ.प्र.)
फोनः 0121–2888711, 2888611 **फैक्सः** 0121–2888546
ई मेलः directoriifsr@yahoo.com **वेबसाइटः** www.iifsr.res.in